Miles to go

Still many miles to go-
Still couldn't reach the soil;
Still couldn't kneel down to those mothers,
Whose oven has still not been lit up for cooking.
Still couldn't reach those school kids,
Whose day starts with the hope of a midday meal.
I've heard that many still live in that village -
They walk many miles to fetch drinking water.
Probably have seen people in the train
With their puffed rice, chilli, satisfied heart,
And their discussions,
That the darkness in their mother's eyes is still not removed -
Though it's yet to twilight,
I heard that mother's cataracts
Have still not been removed :

Still many miles to go.
Those brick ovens along the rail line,
Cooked rice and two half-rotten potatoes,
I couldn't taste them yet -
Sitting on the footpath being one of them.
Haven't slept in their hut,
Spreading a mat on the floor.
Haven't still understood
The boatman's anxiety,
For the news in the broken radio at 1am.
Maybe today also he won't be going to the mid-sea -
"Maybe today also my little darling won't sleep for burning hunger
Tomorrow again it's a Sunday, there won't be any midday meal."
Still haven't seen the face of the little darling -
Haven't seen removing the napkin from the nose,
That there also resides,
A man like me.
Haven't sat beside the girl,
Who collects food from dustbin,
Haven't asked her about her pain and distress :

So I know, even after crossing forty,
Many miles are still to go -
Many miles are still left to go.

রয়েছে বাকি

বহু ক্রোশ চলা এখনো রয়েছে বাকি
মাটির কাছাকাছি এখনো হয়নি যাওয়া
হাঁটু গেড়ে আমি এখনো বসিনি সেই মায়েদের দাওয়ায়,
যার ভাঁড়ারে আজও চড়েনি হাঁড়ি।
এখনো দেখিনি সেই ইস্কুলের শিশুদের
একবেলা মিড-ডে মিলের আশায় যাদের ভোর হয়।
সেই গ্রামেতে রয়েছে শুনেছি অনেকে, আজও
বহু ক্রোশ পথ রোজ চলে শুধু পানীয় জলের আশায়।
হয়ত দেখেছি ট্রেনের কামরায় বহু মানুষের
লঙ্কা, মুড়ি, ফটাস জলের তৃপ্তি
আর আলোচনা—
ঘরেতে তার মায়ের চোখেতে এখনো আঁধার কাটেনি,
সাঁঝের যদিও অনেক বাকি,
মায়ের চোখের ছানি শুনেছি
আজও কাটানো হয়নি।

বহু ক্রোশ চলা এখনো রয়েছে বাকি।
লাইনের ধারে ইঁটের উনুনে
রাঁধা ভাত আর আধপচা দুটো আলু
দেখা হয়নি চেখে
বসে ফুটপাতে ওদের একজন হয়ে।
হয়নি শোয়া ওদের ঝুপড়িতে
একটি মাদুর পেতে।
হয়নিতো বোঝা—
রাত একটায় ভাঙা রেডিওতে খবরের জন্যে—
মাঝির একটানা উদ্বেগ,
আজও বুঝি হবে না যাওয়া মাঝদরিয়ায়
আজও আমার ছোট্ট সোনা ঘুমোবে না ক্ষিদের তাড়নায়
কালকে আবার গোটা রবিবার মিড-ডে মিলের অভাব
ছোট্ট সোনার মুখের ছবি আজও পড়েনি চোখে।
নাকের রুমাল সরিয়ে হয়নি দেখা—
ওখানেও আছে

একটা আমার মতোই মানুষ।
হয়নি বসা ডাষ্টবিনের ওই
খাবার কুড়োনো মেয়েটির একপাশে
জানতে চাইনি ওর ব্যথার আর দুর্দশার চোরাস্রোত।

চল্লিশ পেরিয়েও তাই জানি
বহু ক্রোশ চলা আমার রয়েছে বাকি।
বহু ক্রোশ চলা আমার আজও বাকি।

मीलों चलना है

कई मीले चलना अभी भी बाकि है,

जमीन के निकट अभी तक नहीं पँहुचा मैं,

उन माओं की चौखट पर अभी तक घुटने टेककर नहीं बैठ सका मैं,

जिनके घरों में आज तक चावल नहीं पका,

अभी तक उन स्कूल के बच्चों से नहीं मिल पाया,

जिनकी सुबह होती है एक वक्त के मिड डे मील की उम्मीद से,

सुना है, उस गांव में कई लोग हैं,जो आज भी मीलों चलते हैं,

सिर्फ पानिय जल के लिए,

शायद ट्रेन के डिब्बों में देखा है,मिर्च,मुर्रा और पानी के साथ

कई लोगों की विमर्श भरी बातें,

घर में उनकी माँ की आँखों में आज भी अँधेरे हैं।

देर है सांझ उतरने में,

मगर फिर भी,

माँ की आँखों का इलाज आज भी नहीं हो पाया।

कई मीलें चलना अभी भी बाकी है,

फुटपाथ में बैठकर उनलोगों के एक बनकर,

लाइन के किनारे,

ईट के चूल्हे में पके चावल और आधे सड़े हुए कुछ आलूओं को,

अभी तक स्वाद नहीं लिया।

,अभी तक,उनकी झोपडी में एक ही चादर बिछाकर

नहीं सोया।

अभी तक समझा नहीं,

रात एक बजे टूटे रेडियो में एक माझी के खबर सुनने की बेचैनी कैसी होती है?

आज भी शायद बीच दरिया में जा न सकूँगा,

आज भी मेरा लाडला भूख की तड़प से नहीं सोएगा।

कल फिर पूरे रविवार को मिड डे मील का अभाव रहेगा,

आज भी मेरी आँखें नहीं देखी है उस लाडले की छवि को,

नाक से रुमाल हटाकर नहीं देखा,

वहाँ भी ,

मेरे जैसा ही एक इंसान है,

आज तक डस्टबिन से जूठा खाना उठाने वाली,

उस लड़की के पास जाकर नहीं बैठा,

कभी जानना नहीं चाहा,

क्या है उसके दर्द और दुर्गति के कारण।

इसलिए तो,

चालीस पार करके भी जानता हूँ,

अभी भी मीले चलना बाकी है,

अभी भी मीले चलना बाकी है।